OM 22 MAHARASHTRA final_Page 1 and 2 18/02/2015 17:49 Page 3

परम-आनंद की गहन अनुभूति

-ब्र.कु. सूर्य, माउण्ट आबू

सूर्य देव अपनी यात्रा प्रारम्भ कर रहे थे, उनकी सौन्दर्यपूर्ण सुनहरी रश्मियाँ पूर्वी सागर के जल को प्रकाशित कर रहीं थी। ऐसा लगता था मानो सूर्य की रश्मियाँ सागर को छेदकर आर-पार जा रही हों। सागर में उठने वाली विशाल लहरों की ध्वनि स्तब्धता को चीर कर एक अद्भुत संगीत की रचना कर रही थी...चारो ओर सन्नाटा था। किनारे पर सीना ताने खड़े देवदार के वृक्ष वर्षों से समुद्र की लीला का अवलोकन करते आ रहे थे, किनारे नैसर्गिक पुष्पों के सौन्दर्य से सुशोभित थे। ऐसे एकान्त में इस प्रकृति-सौन्दर्य से योगेश का मन आनंदकारी विचारों की लहरों में लहराने लगा।

योगेश स्व-चिंतन के आनंद में खोने लगा... उसके मन से आवाज़ गूंजी...

योगेश, तुम पर भगवान की दृष्टि है...वह तुम्हें कुछ बनाना चाहता है... क्या तुम्हें उसकी महान आकांक्षाओं का एहसास है...देख, तुझे दर्शनीय मूर्त बनाने के लिए भगवान स्वयं प्रस्तुत है...

और वह अन्तर्मुखता की गुफा में तल्लीन हो गया...वह खो गया काल के भान से परे... सभी संकल्प तल्लीनता के प्रकाश में लोप से हो गए....

विचार प्रवाह पुन: उमड़ा...

जब भगवान की नज़र इस विश्व पर पड़ी तो उसकी प्रथम किरण ने ही तुम्हारा जीवन आलोकित कर दिया... उसकी नज़रें तुम पर आकर ठहर गईं... उसने तुम्हें पसंद कर लिया... उसे न विद्वान पसंद आये और न ही धनवान... उसे प्रिय लगे तुम, क्योंकि तुम में पवित्रता के बीज थे... जिन्हें उसे अंकुरित करना था...

योगेश... जिस पर भगवान की नज़र हो, उसकी नज़र किसी देहधारी पर नहीं जा सकती, जिसे भगवान का साथ मिला हो उसकी नज़र सांसारिक वैभवों में अटक नहीं सकती... फिर तुम कहाँ देखते हो... क्यों छोटी-छोटी इच्छाओं की पूर्ति में अपना अनमोल जीवन गंवा रहे हो। और इस प्रकार उसका विवेक जागा... तृष्णाएँ भस्म हो गईं, मन वैराग्य से परिपूर्ण हो गया... उसे सत्य का बोध हुआ...

सच, भगवान को पाकर... उसकी छवि को निहार कर... उसके प्रत्येक कर्त्तव्य को देखकर... विनाशी प्राप्तियों के पीछे अंधकार में भटकना, यह तो जैसे कि भगवान का भी निरादर करना है... तब भला तुम्हें आदर कैसे प्राप्त होगा...

मधुबन में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में देखे गए अनेक दिव्य दृश्य उसके मानस पटल पर उभर आए... चेहरा खिल उठा...

अहा!... तुम्हारे भाग्य का गुणगान करके तो भक्त भी प्रसन्न होते हैं... तुमने इन आँखों से भगवान को कर्म करते देखा... शिव को अपना झण्डा लहराते देखा, अभोक्ता को भोजन स्वीकार करते देखा... मनुष्यों की तरह दीपक जलाते देखा... गोप-गोपियों की रास निहारते देखा... प्यार के सागर का प्यार भी छलकते हुए तुमने देखा... ज्ञान सागर को ज्ञान बंसी बजाकर सभी के दिल को चुराते भी देखा... तुम्हारा जीवन धन्य धन्य हो गया योगी...

स्मरण करो– तुम्हारा यह जीवन भगवान के साथ बीता... तुम उसके साथ खेले... तुमने उसके साथ खाया...बोलो, और तुम्हें क्या चाहिए... फिर क्यों संसार में इतना विस्तार किया है? तुम्हारी बुद्धिमानी तो इसी में है कि इस भाग्य को इतना बढ़ा लो जो तुम खुले हाथ भाग्य बाँट सको। कहीं ऐसा न हो जब अनेक भिखारी भाग्य मांगने तुम्हारे द्वार पर आएं तो तुम अपने को ही खाली हाथ पाओ...

इस तरह स्व-चिंतन के संकल्प योगेश को परम आनंद की सर्वश्रेष्ठ अनुभूति कराने लगे। उसकी गति धीमी पड़ गई... मानो देह प्रकाशमय हो गई... उसे लगा कि इस संसार में उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं...

सहसा उसकी दृष्टि सागर पर दूर-दूर पड़ी। उसे लगा मानो सागर भी उसकी बुद्धि पर खिल खिलाकर हँस रहा हो... जैसे कि वह अपनी मूक भाषा में कह रहा हो...

हे योगी... तुम भगवान को पाकर भी सन्तुष्ट नहीं हुए... भगवान को देखकर भी तुम्हें और क्या देखने की तमन्ना है... भगवान की दिव्य छवि देखकर भी तुम मग्न नहीं हुए... अभी मैं तुम पर हँस रहा हूँ और अंत में यह सारा संसार तुम पर हँसेगा...

भगवान ने तुम्हारा हाथ अपने हाथ में थाम कर कहा... तुम अब मेरे हो... मेरे हवाले हो जाओ... और यह भी न भूलना कि मैं भी तुम्हारा हूँ... इतना ही नहीं, मेरा जो कुछ भी है वह तुम्हारा ही है... मैं तुम्हारे लिए ही तो आया हूँ... वत्स, कब से मेरी नज़रें तुम पर थीं... मैं तुम्हारे लिए अखुट खज़ाने लाया हूँ... मेरे सब वरदान तुम्हारे लिए हैं... जो चाहो, वरदान ले लो... मेरी सारी शक्तियाँ तुम्हारी ही हैं... स्वयं को जितना चाहो बलवान बना लो... मेरा सम्पूर्ण ज्ञान तुम्हारा है... स्वयं को जितना चाहो बुद्धिवान बना लो... मेरा सम्पूर्ण सुख, शान्ति व खुशियाँ तुम्हारी हैं... स्वयं को जितना चाहो खुशनसीब बना लो... सर्व खज़ाने तुम्हारे लिए हैं... स्वयं को जितना चाहो साहूकार बना लो...

तो उठो, अपनी झोली भर लो... देखना कहीं तुम्हारी झोली खाली न रह जाए... तुम अधिकारी हो, अपने अधिकारों को जानो, उन्हें लेना सीखो। तुम अधिकारी होते हुए भी अब तक खज़ानों की खोज में हो... यह भी कैसी बुद्धि है तुम्हारी... अपनी बुद्धि को दिव्य करो योगी...

सागर पर पड़ती किरणों से उत्पन्न सुनहरा प्रकाश देखकर उसे लगा कि सागर पुन: मुस्काया है... उसके गायन योग्य भाग्य को देखकर...

देखो योगी... श्रेष्ठ भाग्य की तो बात ही क्या... स्वयं भगवान विधाता ही तुम्हारा है... भाग्य की रेखा खींचने की कलम भी तुम्हारे हाथ में है... क्या तुमको भाग्य की अविनाशी रेखा खींचनी नहीं आती... ज़रा अपने वर्तमान व भविष्य को तो देखो, अब तुम प्रभु की शीतल छाया में चैन की बंसी बजा रहे हो... और तुम्हारा भविष्य... वाह! विश्व महाराजन का तख्त तुम्हें ही सुशोभित करना है... प्रकृति तुम्हारी सेविका होगी... फिर भी तुम आनंदित क्यों नहीं हो... तुम्हारा चेहरा फूल-सा खिला क्यों नहीं रहता है... श्रेष्ठ भाग्य की झलक तुम्हारे मस्तक की सलवटें क्यों दूर नहीं करतीं...

योगेश को एक बार फिर से अपने चमकते हुए भाग्य के सितारों के दर्शन हुए... तब ही से उसे अपने अतीत की यादें आने लगीं....

योगेश, एक दिन था, तू सत्य की खोज में भटका करता था, जब तेरी आँखें प्रभु दर्शन की बाट निहारा करती थीं, जब तेरे मन में एक तड़पन थी, जब तू सोचता था बस कहीं भगवान की एक झलक दिख जाए, सर्वस्व बलिहार कर दूं... जब तू गाया करता था... हे प्रभु, अब और इंतज़ार न कराओ... अब आओ... हमारी प्यास बुझाओ, ये अंखियाँ तुम्हारी राह तक-तक कर थक चुकी हैं... इस मिलन के बदले में चाहे तू हमसे हमारे प्राण भी ले लेना... बहुत देर की है... तुम एक बार आ जाओ... हम गिन-गिन के हिसाब लेंगे...

अब ले लो गिन-गिन कर हिसाब... देखो, वह तुम्हारा दोस्त बनकर तुम्हारे पास आया है... तुम उसकी प्रीत में गीत गाते थे, अब उससे प्रीत निभाओ... वह तुमसे सच्ची दोस्ती निभा रहा है। परंतु तुम उसकी दोस्ती में क्या कर रहे हो... क्या तुम उसकी दोस्ती का पूरा लाभ उठा रहे हो...

अब सत्य तुम्हारे पास है... स्वयं भगवान ने तुम्हें आकर पढ़ाया, तुम्हें भला ऐसे और कोई पढ़ा भी कहां सकता था। और किसी के पास तो तृप्ति हुई भी नहीं थी। अब उसने तुम्हारी सभी भटकने दूर कर दीं।

उसके मानस-पटल पर ईश-मिलन की सभी यादें उभर आईं।

ओह! यह प्रभु मिलन, जिसका मुझे युगों से इंतज़ार था... आह! इस मिलन का अनुपम सुख... इस सुख के समक्ष समस्त वैभव मिट्टी तुल्य है... इसी सुख का वर्णन करते-करते शास्त्र भी थक गए। यह सुख तुमने अनेक बार पाया है... आश्चर्य... लोगों की तमन्ना है कि यह मिलन हो, परंतु उन्हें पता नहीं कि कैसे हो... हमें ज्ञात है, सब कुछ ज्ञात है... फिर भी हम भी इस रस को निरंतर - शेष पेज 8 पर...

जलगाँव। महा. के राजस्व मंत्री एकनाथराव खडसे को नए वर्ष की शुभकामनाएं देते हुए ब्र.कु. तेजल।

मैसूर-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'द्वादश ज्योतिर्लिंगम दर्शन मेला' का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए देशीकेन्द्र स्वामी जी,सुत्तुरु मठ तथा विधायक बी.सी. पाटिल।

विलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.रामप्रकाश, छ.ग. लघु व्यापार एवं उद्योग समिति के अध्यक्ष हरीश केडिया, डॉ. गीता त्रिपाठी,डायरेक्टर केयर स्कूल, ब्र.कु. सविता तथा अन्य।

भिलाई-छ.ग.। सेंट थॉमस कॉलेज में कौमी एकता सप्ताह के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. गीता को सम्मानित करते हुए कॉलेज के डायरेक्टर।

सूरत-अडाजन। नेशनल एन.सी.सी. कैम्प के कैडिडेट्स को 'सेल्फ डिसीप्लिन' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रुशी।

रीवा-मऊगंज। नवनिर्वाचित नगर पंचायत अध्यक्षा चन्द्रप्रभा गुप्ता को बधाई देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. लता तथा बेबी बहन।